॥ श्री नेमिनाथाय नमः ॥

जैन चित्रावली

सम्पादक —

व्या० रत्न पं० सतीशचन्द्रजी, न्यायतीर्थ,

पं० कस्तूरचन्दजी, शास्त्री



प्रकाशक

दुलीचंद पन्नालाल परवार

मालिक

जिनवाणी प्रचारक कार्यालय

८२ लोअर चीतपुर रोड, कलकत्ता।

प्रथमवार १००० { All Rights Reserved } न्योछावर ४)

वी० नि० सं० २४६३

मेरे दो शब्द

पाठको! आज ऐसे विकट समयमें जब कि कार्यालयके मालिकका स्वर्गवास हो गया है, फिर भी हम एक नई चीज लेकर आपके साम्हने आते हैं। जैन समाजमें यह एक बिलकुल नई चीज है, यद्यपि इसका सम्पादनका कार्य स्व० बाबू साहबकी देख रेखमें बहुत समयसे चल रहा था फिर भी अगर स्व०बा० पन्नालालजी रहते तो यह चित्रावली और भी महत्वपूर्ण होती।

ग्रीष्म और शीत परीषहका डिजाइन हमारे परम मित्र बा० छोटेलालजी जैनकी कृपासे बाबू साहबकी कोशिश धन्यवाद है। चित्रपरिचय पं० शतीशचन्द्रजी प० कस्तूरचंदजीने कई महीने लगातार परिश्रम करके खोजके साथ लिखनेकी कृपा की है। इस महती कृपाके लिये हम पंडितजीके कृतज्ञ हैं। आशा है आप भविष्यमें भी इसी तरह उदारता दिखाते रहेंगे।

ब्लाक बनानेका कार्य हमारे मित्र दीक्षितजीने अपनी "आइडल हाफटोन कंपनी"में बहुत शीघ्रतासे उत्तमतापूर्वक कर दिया है इसके लिये भी हम उन्हें धन्यवाद दिये बगैर नहीं रह सकते।

अंतमें "वणिक् प्रेस" के मालिकोंके प्रति भी हम कृतज्ञता प्रगट करते हुए आशा करते हैं कि भविष्यमें आप इसी तरह हमें सहयोग देते रहेंगे।

संभव है भावोंमें, कहीं २ भूलें हुई होगीं, इसके लिये पाठक कृपया हमें सूचित करनेका अवश्य ही कष्ट उठावें ताकि द्वितीयावृत्तिमें ठीक कर दी जाय।

निवेदक—

दीपावली—२४५३ कलकत्ता] नृपेन्द्रकुमार जैन मैनेजर

चित्र-सूची

सेठ चारुदत्त और वसन्त सेना

चारुदत्त सेठको जैन समाजका ऐसा कौन व्यक्ति है जो न जानता हो। चम्पापुरी नगरीमें भानुदत्त नामका एक राजा रहता था। रानीका नाम सुभद्रा था इनके कोई पुत्र न होता था, काल वश चारण मुनि आये और सुभद्रा रानीसे कहा कि तुम्हारे अब शीघ्र ही पुत्र होगा। कुछ समय बाद तथा मुनिके कथनानुसार पुत्र उत्पन्न हुआ जिसका नाम चारुदत्त रक्खा गया। चारुदत्त चन्द्रमाकी तरह दिन प्रति दिन बढने लगा और अवस्थानुसार धर्म, अर्थ, कला, व्यापार आदिमें निपुण हो गया। इसकी धर्ममें रुचि अत्यधिक रही। ग्रन्थोंके अवलोकनसे इसका ज्ञान इतना बढ गया कि यह ससारके सर्व कार्यको छोड़कर रात दिन शास्त्र अध्ययनमें ही लगा रहता था। यद्यपि चारुदत्तका विवाह भी सर्वार्थ नामा मामाकी लड़की चित्रावतीसे हो गया था, परन्तु शास्त्राध्ययन सब व्यसनोंका बाधक है।

एक दिन इसकी सास सुमित्राने चारुदत्तकी मातासे कहा कि तेरा पुत्र हुआ होनेपर भी बडा मूर्ख है, यह स्त्रीकी चर्चा जानता ही नहीं। तब इसकी माताने व्यसनासक्त रुद्रदत्तसे कहा "जो चारुदत्तका काका था" कि इसे किसी प्रकार भी कामासक्त करो। फिर क्या था, रुद्रदत्त चारुदत्तको वसन्त सेनाके घर ले गया। वहांपर उस मङ्गलामुखी वसन्त सेनाने अपना मोहनी मन्त्र चारुदत्तपर डाल दिया, और ये उसपर ऐसे लट्टू हो गये कि १२ वर्षतक घर नहीं आये, और माता पिताको भी भूल गये। इन्हों सेठजीने १६ क्रोड दीनार इस मङ्गलामुखी वसन्त सेनाके पीछे वर्बाद कर दिया जिसको कि आप सामने मना रहे हैं।

चारुदत्त सेठ सन्यासीके जालमें

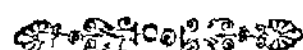
सोलह क्रोड दीनारोंका स्वाहा करके जब इनको स्त्रीके भी आभूषण आने लगे तब वसन्त सेनाकी मा कलिङ्गसेनाने अपने घरसे बाहर निकाल दिया। ये इधर उधर भटकते भटकते अपने घर आये। इनके पिता भानुदत्त मुनि हो गये, और माता पतिके वियोगमें अति दुःखी हो रही थी। स्त्रीके दुःखका तो कोई पारावार न था। पत्नी इन्हें देखकर विलाप करने लगी। चारुदत्तने इन्हें धीर बधाया और अपनी स्त्रीके बचे खुचे जेवर लेकर व्यापारके लिये परदेश निकले। रास्तेमें कितनी आपदायें उठानी पडी। ये जिस कामको करते उसीमें नुकसान उठाना पडता। एक बार कपास खरीदी, कपास जल गई, घोडेपर सवार हो पूर्व दिशाको जा रहे थे कि रास्तेमें घोड़ा मर गया। फिर समुद्रमें ६ बार व्यापार निमित्त यात्रा की पर लाभ कुछ न हुआ। सातवी बार जहाज फट गया और एक लकडीके सहारे समुद्रके तीरपर आ लगे। वहां पास ही राजपुर नामके नगरमें एक सन्यासी रहता था, उससे इनकी मुलाकात हो गई। उसने झांसे पट्टीमें सुवर्ण रस कूपिका प्रलोभन देकर लुभा लिया। ठीक ही है, धनका लोभी क्या नहीं करता? आप धनके लोभसे उस मायाचारी सन्यासीके पीछे जा रहे हैं। मानो इन्हें सोलह क्रोड दीनार फिर मिल जायगे। वही सन्यासी रस कूपमें पटक देता है तब आप गोहकी पूंछ पकड़कर बाहर निकल रहे हैं।

कृष्णकी माताके सात स्वप्न

देवकीके ६ पुत्र हुए पर दैववशात वे छहों पुत्र देवकीसे पृथक् अन्य जगह, भद्रलपुरमें सुदृष्टि नामक सेठके यहा रहे, किन्तु यह बात देवकीको नहीं मालूम थी, इसलिये देवकी अपने पुत्रोंकी वियोग चिन्तामे हर समय ग्रसित रहती थो। यह बात वसुदेवने जानकर देवकीसे कहा,तुम उनकी चिन्ता क्यों करती हो ? तुम्हारे पुत्र सुदृष्टि नामक सेठके घरमें अच्छी तरह हैं। यह सुन देवकी प्रसन्न हुई। एक समय देवकी अस्वस्थावस्थामे अपने पतिकी शैयापर शयन करती थीं, तब रात्रिके पिछले पहरमें सात स्वप्न देखे। क्रमसे इनके नाम १ सूर्य २ चन्द्रमा ३ लक्ष्मी ४ विमान ५ अग्नि ६ ध्वजा और ७ रत्नोंकी राशि हैं। इन स्वप्नोंका फल भी इस प्रकार है।

१—सूर्य देखनेसे अन्याय रूप अन्धकारका नाश करनेवाला, प्रतापी पुत्र होगा।
२—चन्द्र देखनेसे वह पुत्र महाकान्ति और सौन्दर्यका धारक होगा।
३—लक्ष्मी देखनेसे राज्यभिषेकके योग्य होगा।
४—विमान देखनेसे वह पुत्र देवलोकसे आवेगा।
५—अग्निके देखनेसे महा तेजधारी होगा।
६—ध्वजाको देखनेसे देवोंसे प्रशसनीय मनुष्योंका स्वामी होगा।
७—रत्नोंकी राशि देखनेसे गुणरूप रत्नोंकी राशिका पुञ्ज होगा।

कारागारमें कृष्णजन्म



रानी देवकीने ७ स्वप्न देखे, और रानीने अपने पतिसे कहे, पतिने उन स्वप्नोंका फल बताते हुये कहा कि तुम्हारे पुत्र रत्न उत्पन्न होगा, जो अपने प्रतापसे शत्रुओंका नाश करनेवाला, सर्व लोक प्रिय, परम सौभाग्यवान, राज्याभिषेक योग्य, बल कान्तिका धारण करनेवाला, निर्भीक पृथ्वीका स्वामी होगा। इसप्रकार अपने पतिके सन्तोषजनक वचन सुनकर देवकीको अत्यन्त आनन्द हुआ। और कुछ दिनों बाद रानीने सर्व जीव हितकारी सन्ताप शान्त करनेवाले गर्भको धारण किया। गर्भस्थ बालक जैसे-जैसे बढ़ता था वैसे वैसे मनुष्योंको आनन्द भी वृद्धिङ्गत होता था। रानी देवकीको भी अत्यन्त हर्ष होता था। परन्तु इस गर्भसे राजा कंसका मन दिनोंदिन खेदखिन्न होने लगा। वह पापी कंस बालकके अनेक उत्तमोत्तम गुणोंका विचार न कर बालककी उत्पत्तिके दिन और मास सम्हालने लगा। दुष्ट कंसका यह ध्यान था कि कृष्ण अन्य लोगोंके समान नौमासके बाद उत्पन्न होगा, परन्तु वह उत्तम श्रमण नक्षत्रमें भाद्रपद शुक्ला द्वादशीके दिन सातवें मासमें ही गुप्त रूपसे उत्पन्न हो गये। बालक कृष्ण, शंख, चक्र, गदा, पद्म आदि शुभ लक्षणोंसे विभूषित थे। और उनका शरीर सुन्दर नील मणिके समान दैदीप्यमान था। अतएव उत्पन्न होते ही उनने अपने शरीरकी दीप्तिसे देवकीका प्रसूति गृह दैदीप्यमान कर दिया।

बालक श्रीकृष्णको नन्दके घर लेजाना

रात्रिका समय था, घोर अन्धकार समस्त भूतलपर छा रहा था, नगर निवासी निद्रा-देवीकी गोदमे प्रमोद कर रहे थे, उससमय वसुदेवजी बालक श्रीकृष्णको गोदमें लेकर कारागारसे बाहर निकले, कसके सशस्त्र सिपाही सो रहे थे, उनमेंसे कोई भी जाग्रत न था स्त्री पुरुष, पशुपक्षी आदि सभी निद्राके वशीभूत थे, वे धीरे २ नगरके फाटकपर आये, वहांपर भी वही दशा थी, जैसी कि कारागारके सशस्त्र सिपाहियोंकी थी, दरवाजेके दृढ़ कपाट श्रीकृष्णके चरण स्पर्शसे खुल गये। उस समय पानी बरस रहा था। पानीकी एक बून्द बालकके एक कानमे पड़ी जिससे उसे छींक आई, छींकका शब्द राजा उग्रसेनने सुना जो कि दरवाजेके ऊपर बैठा था उसने शुभाशीर्वाद दिया, तुम चिरजीव रहो, तुम्हारी विघ्नबाधायें नष्ट हों, यह सुनकर वसुदेवने उग्रसेनसे कहा पूज्य यह रहस्य गोप्य है। इस देवकीके पुत्रसे तुम कारागारसे मुक्त होगे, यह शुभवचन सुन कर वसुदेव (बलिभद्र) श्री कृष्णको लेकर चले।

नंदके घरमें श्रीकृष्ण

वासुदेवजीने यमुना नदीको पारकर नन्दरायके गोकुलमें प्रवेश किया। जिस समय वासुदेवजी बालक श्रीकृष्णको लिये हुये गोकुलमें पहुचे थे उस समय वहा भी वही दशा थी जो निद्रादेवीके प्रभावसे हो जाती है। गोप गोपी पशुपक्षी प्रगाढ निद्रादेवीके वशमे सोये हुये थे। कोई भी सचेत न था, और यही दशा नन्दरायजीके घरकी थी, वसुदेवजी बालक श्रीकृष्णको लिये हुए वहांपर पहुचे जहा माता यशोदाने प्रसव किया था, उस प्रसूतीगृहमें भी निद्रादेवीका एक छत्र राज्य छा रहा था, सब दासिया और गोपिया सो रही थीं और स्वय यशोदा भी निद्रामें तल्लीन थीं। निद्रादेवीने उनपर इतना प्रगाढ अधिकार जमा रक्खा था कि उन्हे यह भी न मालूम हुआ कि मेरे पुत्र हुआ है या कन्या। इसी समय वसुदेवजीने श्रीकृष्णको यशोदाजीके पास सुला दिया और प्रसूति हुई कन्याको उठा लिया, इस प्रकार वसुदेवजी कन्याको लेकर गोकुलसे लौटकर मथुरा आये, इस समयतक मथुराके मनुष्य निद्राके वशीभूत हो रहे थे, एक भी मनुष्य सचेत नहीं हुवा था, नगरका द्वार तथा कारागारके कपाट भी उसी तरह खुल गये, तथा ज्योंके त्यों बन्द हो गये। और वासुदेवजी कन्याको लेकर बन्दीगृहमें आ गये और उस कन्याको देवकीको निश्वासके लिये दे दी।

अरि नाश



वसुदेव तथा देवकी बन्दीगृहमे बैठे हुये हैं, फाटक आदि पहलेकी तरह यथावत् बन्द हैं। इसी समय कन्याके रोनेका शब्द पहरेदारोंको सुनाई दिया पहरेदार सचेत हुये। तत्काल उत्पन्न हुए पुत्रकी खबर राजा कसको प्राप्त हुई। राजा कस तो इस चिन्तामें निमग्न रहता ही था और समयकी प्रतीक्षा किया करता था कि वह समय आवे जब देवकीके सन्तान हो और वह मारू, बस फिर क्या था पहरेदारोंसे यह खबर सुनकर निर्दयी कस कारागारकी तरफ दौड़ा, और वहां आकर देखा कि यही मेरा काल है, परन्तु उसने अपने मनमे यह भी सोचा कि यह तो कन्या है इसलिये यह तो मुझे मार न सकेगी, किन्तु इसका पति कोई राजकुमार मेरा शत्रु हो सकता है, ऐसा मनमे विचारकर अरि सशंकित हो, कन्याको पत्थरसे मारनेके लिये राजा कसने कन्याके दोनों पैर पकड़कर ऊपर उठा लिया है और पत्थरसे मारना ही चाहता है, उधर राजा वसुदेवने "इस कन्याको न देख सकनेके कारण" अपनी आखे बन्द करली हैं और इधर देवकी राजाकसको मना कर रही है।

श्रीकृष्णका सहस्रदल कमल तोड़ना

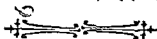
राजा कस श्रीकृष्णके मारनेके उपायोंसे अभी शांत न हुआ था, यद्यपि श्रीकृष्णसे कसको कई बार नीचा देखना पडा था, परन्तु तोभी वह बाज न आया। उसने कृष्णके मारनेके लिये गोकुलके गोपोंको आज्ञा दी कि नागद्रहसे सहस्रदल कमल तोड़कर लाओ। उस नागद्रहमें महा विकराल नागकुमार देव रहता था, उसमे कोई स्नान भी नहीं कर सकता था। उस नागद्रहसे कमल कौन ला सकता था, कसने यही सोचा कि इसी नाग द्वारा मेरे शत्रुका नाश होगा।

जब कसका आज्ञापत्र गोकुलमें आया, तब सभी स्त्री पुरुषोंको चिंता हुई कि यह कमल तोड़ने कौन जायगा। इस प्रकार गोकुलके सब गोप गोपी चिन्ता ग्रस्त थे, उस समय महाव्रती श्रीकृष्ण उस नागद्रहमें कूद पडे और महा जहरीले अग्निकणोंको वर्षानेवाले नागके ऊपर जा खडे हुये और शीघ्र ही उसे वशमें कर लिया। यह दृश्य देखकर किनारे पर खडे सर्व गोप गोपी प्रसन्न हो रहे हैं।

कंसके योद्धाओंसे कृष्णका युद्ध

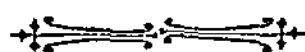
कसने समझा था कि कृष्ण सहस्रदल कमल तोड न सकेंगे और यदि तोडगे तो प्राणान्त भी हो जायगा, पर यह धारणा उसकी निर्मूल थी। कृष्ण हसी खुशीसे सहस्रदल कमल तोड लाये और गोप गोपियोंके साथ किलोल करते हुये घर आये। घरमें हरेक तरहका आनन्द मनाया गया, परन्तु कस इस बातको कब सहन करनेवाला था, उसने उसी समय आज्ञा दी कि नन्द नन्दन आदि सभी गुवाला गण यहा आकर मल्ल युद्ध करें। यह आज्ञा निकालकर कसने उनके पास मल्लयुद्ध करनेके निमित्त एक पत्र भी भेज दिया। इधर दोनों भाई बलभद्र और श्रीकृष्ण युद्धके लिये तैयार हो गये। पर इसी बीचमें बलभद्रने कृष्णकी मातासे यह भी कहा कि तुम अभीतक गोपियनके स्वभावको नहीं छोडती हो, कृष्णने अभी नहाया ही नहीं है" यह वचन कृष्णको बुरे लगे, और तुम मेरे माता पिता गुरु आदिको ऐसे वचन क्यो कहते हो, तब बलभद्रने कृष्णको छातीसे लगाकर सब हाल सुनाया और कहा कि कस तुम्हारा जन्मका वैरी है, और तुम्हारे भाइयों तथा बहिनोंको पत्थरसे पछाड़ २ कर मार डाला है, यह सुनते ही कृष्णका क्रोध समुद्र उमड़ उठा और कसको मारनेके लिये चले। रास्तेमें कसके असुरनाग, गर्द्धव और तुरगका रूप धारण कर आये पर कृष्णने इन सबको मार भगाया। नगरके दरवाजेपर २ मदोनमत्त हाथी थे, उनका भी मद चूर २ कर उनके दात उखाड सीधे मल्लयुद्ध भूमिमें आ गये। बलभद्रने कृष्णको कस आदिका परिचय दिया। कसने अपने २ योद्धाओंको युद्ध करनेके लिये सकेत किया, जिनके नाम चाडूरी, मुष्टी थे। ये बडे भारी पहलवान, अच्छे पहलवानोंके दात खट्टे करनेवाले थे। परन्तु बलभद्र और हरिके सामने वे क्या कर सकते थे। बहुत देरतक युद्ध होता रहा। अन्तमें बलभद्रने तो एक ही थप्पड़में मुष्टि नामक पहलवानको स्वर्गलोगको पहुचा दिया और दोनों हाथोंसे कस लिया और एक ऐसा घूसा मारा कि जिससे मु हसे खून उगलने लगा अन्तमें मु हसे खून उगलते २ उसका प्राण पखेरू भी उड़ गया।

मथुरा प्रयाण



श्रीकृष्णजी और बलराम मथुरा जा रहे हैं। श्रीकृष्णजीकी लीला अपार है। ब्रजमें बडे आनन्दसे गोपगोपियोंके साथ लीला करते हुए ब्रजवासियोंकी रक्षा करते थे। एक समय श्रीकृष्णजीसे कुमार भानुका साक्षात हुआ कृष्णको ब्रजवासी स्त्री पुरुषोंने यह जाना कि सचमुचमे वे मथुरा जा रहे हैं तो अपना अपना काम छोडकर स्त्रिया जेसी जिस काममें लगी थीं वैसी ही उन कामों को छोडकर श्रीकृष्णको देखनेके लिये दौड़ी आई। गोप गोपिया उनका वियोग क्षण भर भी न सह सकते थे। गोपिया व्याकुल होकर अपने तन मनकी भी सुध भूल गई हैं। उन्होने रथको चारों तरफसे घेर लिया है। किसीके सिरके बाल खुले हैं तो किसीकी साडी ही नीचे गिर पडी है। और कोई २ तो उनके ध्यानमें मूर्ति या चित्र रेखाके समान खडी है, और कोई मूर्च्छित जमीनपर गिर पडी है। कोई इनके वियोगसे दु खी होकर हाहाकार कर रही है, कोई इन्हे रोक रही हैं, कोई यह भी कहती हैं कि हे विधाता! तू दुष्ट है, तुझमे दयाका सचार भी नही जो सयोगियोंको वियोगी बनाता है। इस प्रकार विलाप करती हुई गोपियोंको छोडकर श्रीकृष्ण मथुरा आये।

नारदजीका द्रौपदीपर कोप



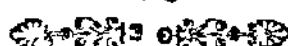
जब पाडवोंने कौरवोको हराकर अपना राज्य वापिस ले लिया। हस्तिनापुरके निवासी तथा अन्य सब प्रजागण पाडवोंकी न्याय, नीति, धर्मपरायणता और राज कुशलता देखकर इनपर इतने मुग्ध हो गये कि दुर्योधनादिकको चिरकालके लिये भूल गये। प्रजाजनक सुख, शाति, भोग उपभोग तथा अति आनन्दसे अपने दिन व्यतीत करने लगे, किसीको किसी बातकी चिन्ता न थी, सब अपने अमन चैनसे रहते थे। पाडव लोग सभामे बड़ी चतुरतासे काम लेते थे, उस समय कदाचित् सभामें कलह प्रिय श्रीनारदजी आ गये, वहापर सब भाइयोंने उनका आदर विनय किया, पश्चात् नारदजी राज भवनमें गये वहापर सब स्त्रियोंने आदर किया परन्तु द्रौपदीजी अपने काममें लगी हुई थीं और अपने सौन्दर्य तथा आभूषणोंको सम्भाल रहीं थीं, अतएव उन्होंने नारदजीको न देख पाया, और न उनकी विनय ही की, इस महान अपमानको नारदजी न सह सके, और द्रौपदीको तिरस्कृत और नीचा दिखानेके लिये बडे क्रोध, आश्चर्य और आखोंको लाल पीली किये हुए कुछ देर खडे रहे पश्चात वहासे चले गये।

श्रीकृष्णका पराक्रम



कलह प्रिय श्रीनारदजी द्रौपदीसे गुस्सा होकर अमरकका नामकी नगरीमें आये धातुकी खण्डके पूर्वार्द्ध भरतक्षेत्र है उसमें अगदेश नामक एक देश है और उसी देशमें यह नगरी है इस नगरीके पास दक्षिण समुद्र है, इस नगरीका राजा पद्मनाम था वह अत्यन्त विषयी और स्त्री लोलुप था। नारदजी इसके पास गये और द्रौपदीके रूपकी वर्णनातीत प्रशंसा की। पद्मनाभका सगामसक नामक देव अपनी मायासे द्रौपदीको यहा हर लाया। पद्मनामने द्रौपदीको बहुत ललचाया और वशमें करना चाहा पर कुछ न हुआ, इधर पाण्डवगण द्रौपदीको सब जगह ढूढकर थक गये तब एक दिन विचार कर रहे थे कि इतनेमें नारदजीने पदार्पण किया और कहा द्रौपदीको मैंने अमरकका नामकी नगरीमें देखा है और वह बहुत दु खित है। श्रीकृष्ण और पाडव द्रौपदीको लानेके लिये तैयार हुए तथा रथोंपर सवार होकर दक्षिण समुद्र पार करके अमरकका पुरीमें पहुचे, वहापर राजा पद्मनाभसे युद्ध किया और द्रौपदीको लेकर समुद्र तटपर आ गये कृष्णजीने इस समय समुद्रके तटपर विश्राम किया इतनेमें पाडवगण नौकाओंमें सवार होकर उस पार आ गये कृष्णजी उठे और देखा कि पाण्डव नहीं है तब द्रौपदी सहित रथको अपनी एक भुजापर रखकर और एक बाहुसे समुद्र तैरते हुए आ रहे हैं। नारायणका बल अपार है।

पाण्डवोंकि द्यूत क्रिड़ा



समयकी विचित्र गति है, वह अचलसे समान निश्चल, धमधीर पुरुषोंको भी विचरा कर देता है। मोह ममतामें फसकर यह जीव क्या नहीं कर सकता ? अन्यायसे अन्याय अधम से अधर्म, और तो क्या नीचसे नीचतर काम भी करनेको तैयार हो जाता है। ठीक यही हाल दुर्योधनका हुआ। पाण्डवोंकी बुद्धि, विभूति दया, दाक्षिण्य, ज्ञान, धर्म आदि गुणोंको देखकर दुर्योधन अपने मनमें हमेशा ईर्षा रखता ही था, दुर्योधनने पाडवोंको मारनेके लिये क्या २ उपाय न रचे, लाखका महल बनवाया, भीमको जहरपान कराया इत्यादि, परन्तु इन सब उपायोंसे पाट वोंका कुछ न हुआ, बल्कि दुर्योधनको ही उल्टा नीचा देखना पड़ा, और अभी द्रौपदी स्वयम्वरमे भी ऐसा ही हुआ, बस फिर क्या था दुर्योधन और जल उठा, उसका रात दिन चिन्ता व्यथित करने लगी, पाण्डवोंकी सम्पत्ति देखकर दुर्योधनादिक १०० भाइयान मिलकर उनकी मर्यादा बस्-ह्नन करनेका विचार किया तब दुर्योधनके मत्री सकुनीने दुर्योधनको कहा कि युधिष्ठर सत्य प्रतिज्ञा सरल स्वभावी जीव है, उसे द्यूत क्रीडामें कपटके पासोंसे जीता। यह विचार हुआ ही था कि युधि ष्ठर महाराजको जुयेके लिये आमन्त्रण किया गया। युधिष्ठर महाराज पाचों भाइया सहित दुर्यो धनके यहा पधारे और जुयेके लिये चौसर बिछायी गई। कौरव पाडव जुआ खेल रहे हैं। हा! दुर्दैव। धर्माधिकारी, नीति कुशल पुरुषोंकी भी ऐसी गति होती है। दुर्योधनकी तरफसे शकुनी पाशा फेंक रहा है, पहला दाव शकुनीका, और दूसरा युधिष्ठिरजीका और फिर शकुनीने ही सब हाथ

मारे। अन्तमें युधिष्ठिर महाराज अपना तमाम राजपाट, गहना गुरिया, माल खजाना हाथी घोडे आदि सभी वस्तुए हार गये और तो क्या अपने शरीरपर पहने हुये आभूषण कपडे लत्ते सभी हार गये और अपने स्वयम भी हार गये। तब दुर्योधनने युधिष्ठरसे कहा कि तुम सब कुछ हार गये और १२ वर्षके लिये राज्य भी हार गये इसलिये तुम १२ वर्षतक पाचों भाई द्रौपदी सहित वनमें जाकर रहो, यहा रहनेकी जरूरत नहीं, और ऐसी प्रच्छन्न रीतिमें रहो जिसमे कि हमें न मालूम पडे। ये दुर्योधनके वचन सुनकर सत्य प्रतिज्ञ युधिष्ठिर सब राज्य पाट छोडकर वनको जा रहे हैं और उनके पीछे सती द्रौपदी चिन्ता करती हुई जा रही है।

द्रौपदी स्वयम्वर

द्रुपद सुताकी सौन्दय और रूप लावण्य इतना अधिक था कि उसे वरण करनेके लिये अङ्ग, वङ्ग, कलिङ्ग इत्यादि देशोंके राजकुमार वरण करनेके लिये दूत भेजते थे, इससे राजा द्रुपदने यह विचार किया कि इसे सभी राजाओंके राजकुमार वरण करना चाहते हैं और एतदर्थ प्रार्थना भी करते हैं, मैं किस किसको प्रार्थना स्वीकार करू और किसको न करू और प्रार्थना भग करना अच्छा नहीं, इस लिये राजा द्रुपदने स्वयम्वरके लिये विचार किया और तदनुसार स्वयम्वर रचा गया। सब राजाओं, राजकुमारोको स्वयम्वर होनेकी सूचना दी गई और साथमें यह भी कहा कि जो राजा "वेधवन्धि हो वह कन्याको वरण करे'। यह बात सुनकर कर्ण, दुर्योधन तथा अन्य अन्य देशोंके राजा महाराजा राजा द्रुपदकी माकुन्दाकी नामकी नगरीमें आये, जहापर स्वयम्बर रचा गया था। सब राजा स्वयम्वर मडपमे आ गये तब सुरेन्द्र वर्द्धन नामक विद्याधरने गाडीव नामक धनुष सभा-मण्डपके बीचमें रक्खा और कहा कि जो इस धनुपको चढावे और राधावेध बीधनेको समर्थ हो वह द्रौपदी पति होगा।

यह घोषणा सुनकर द्रोण, करण, दुर्योधनादिक राजालोग धनुपके पास गये, पर उनमेंसे कोई उसे रचमात्र हिला भी न सका और न स्पर्श ही कर सके, तदनन्तर वीर अर्जुन धनुपके पास आये और धनुप देखा तथा स्पर्श भी किया। बाद अर्जुनने धनुष चढाया उस समय धनुपकी प्रत्यञ्चा चढनेका ऐसा शब्द हुआ जिससे करण दुर्योधनादिकोंके कान बधिर समान हो गये। और धनुप चढाकर कुन्तीपुत्र अर्जुनने निशाना वेध दिया, बस, उसी समय द्रौपदीने अर्जुनके सुन्दर कठमें अपने करकमलोंसे वर माला डाल दी, वर माला डालते समय अचानक मालाका तार टूट गया औ पवन झकोरेमे माला फूल पाचो भाइयोंपर पडे, इस कारण मूर्खलोग कहने लगे कि इसने पाचाहीको वरण किया पर यह ऐसी बात नहीं है, द्रौपदी अर्जुनकी ही स्त्री है और उसने अर्जुनको ही वर माला पहनाई है।

वसुदेव कृष्णको लेकर यमुना तटपर

वसुदेव कृष्णको गोदीमें लेकर यमुना तटपर पहुचे। यमुनाका प्रवाह इतना जोरसे चल रहा था कि उसको पार करना बडा कठिन होगया। इधर चारो तरफसे वर्षा हो रही थी। मेघ घड घड गरज रहे थे, यमुनाके प्रवाह की तुमुल ध्वनि कानोको बहरा कर रही थी, बिजलियो चमक रही थीं, अब ऐसे समयमें करे ता क्या करे, कैसे पार हों, यह विचार करही रहे थे कि बालक कृष्णके प्रताप से यमुनाका प्रवाह घट गया। अतएव वसुदेव बालक कृष्णको लेकर यमुना पार कर रहे हैं।

श्रीकृष्णकी सजावट

बाल श्रीकृष्ण दोजके चन्द्रमाकी तरह बढने लगे। नाना तरहकी क्रीडा करते हुये माता पिताको अपार आनन्द देने लगे। एक समय सहस्रदल कमल तोडने के लिये जारहे थे उनके साथी कृष्णको बुलानेके लिये सामने खड़े हैं। और कृष्ण आतुर चित्त हो उनके साथ जानेके लिये जल्दी कर रहे हैं। माता यशोदा उनका शृङ्गार कर रही हैं।

पूतना बध

राजा कसने सिद्ध की हुई सात देवियोंसे कहा कि कोई गुप्त रीतिसे मेरा शत्रु वृद्धि पा रहा है, तुम उसकी अभी तलाश करो और निर्दय हो उसी समय मृत्युके मुखमें पहुचा दो। कसकी यह आज्ञा सुन ये देविया उसके शत्रु के नाश करनेके लिये प्रयत्न करने लगीं। एक देवीने कृष्णके मारनेके लिये पूतनाका रूप धारण किया, जिसकी आकृति बड़ी भयङ्कर थी। उसने अपने स्तनोंके अग्रभागमें जहर लगा लिया और कृष्णको अपना दूध पिलाने लगी। कृष्ण पहिलेसे जानते ही थे। कृष्णने अपने मुँहसे उसके स्तनके अग्रभागको इस जोरसे काटा कि वह रोने, चिल्लाने लगी, वही दृश्य चित्रकारने दर्शाया है।

श्रीनेमिनाथका ब्याहके लिये गमन

वसन्तऋतुका समय था। नगर निवासी सभी आनन्दमय थे वसन्तऋतुके आगमनसे लोगोंके मनमें स्वभावत कामदेवका सचार हो उठता है। इसलिये सब नगर निवासीजन वन क्रीडा करनेके लिये गये। कृष्ण भी अपनी सब रानियोंके साथ गये, तथा श्रीनेमिनाथको भी लेते गये। वहाँ दो मास तक वन क्रीडा करते रहे। कृष्णकी आज्ञासे रानियोंने नेमिनाथको विहार कराया। ये वन क्रीडाके दो मास व्यतीत होते हुये कुछ देर न लगी। बाद वसन्तके ग्रीष्मऋतु आगई, और लोगा-

को जल क्रीडा करनेकी ठहरी। कृष्ण, नेमिनाथ, रानियाँ तथा अन्य नर नारी नदीपर जल क्रीडा करनेके लिये गये। वहाँ जल क्रीडाकर सबोंने नवीन २ वस्त्राभूषणोंको पहना। नेमिनाथने भी नवीन वस्त्राभूषण पहने, और कृष्णकी स्त्री जामवतीसे नेमिनाथने कहा कि ये जलक्रीडाके वस्त्र धोलो, तब जामवन्ती कुपित होकर बोली, मेरे पति शङ्ख, चक्र गदा, पद्म, धारण करने वाले नाग शैय्या शायी श्रीकृष्ण हैं। आप उनके छोटे भाई है। इसलिये तुम मेरे लडकेके समान हो। तुम मुझे कैसे वस्त्र धोनेकी आज्ञा देते हो। यह बात नेमिनाथको बुरी लगी, और कहा तेरे पतिका क्या अद्भुत कार्य है इसे तो मैं अनायासही कर सकता हूं, यह कहकर प्रभु नेमिनाथ राजमन्दिरमें आये, और नागशैय्यापर चढे, शङ्ख बजाया, धनुष चढाया, तब सब लोग चकित हो गये। इधर कृष्ण सभामें बैठे हुये थे सो सभामें क्षोभ हो गया। इनके पराक्रमको देख वासुदेव आश्चर्यको प्राप्त हुये, और कृष्णने जामवन्तीको कटुक वचन कहे।

बाद श्रीकृष्णने नेमिनाथके व्याहके लिये राजमति नामक राजसुता भोजवंशियोंसे माँगी। ग्रीष्मऋतु भी व्यतीत होचुकी थी और वर्षाऋतुने अपना पदार्पण कर दिया था। इसी समय श्रीनेमिकुमार घोडोंके रथमें सवार होकर राजमतिसे साथ व्याह करनेके लिये जा रहे हैं। मार्गमें बाई तरफ, तृण घास, फूंस, पत्ते चरने वाले हरिणोंको तथा अन्य जीवोंको घिरा हुआ देख सारथीसे पूंछ रहे हैं कि जीवोंका क्या होगा ? ये क्यों घेरे गये हैं ?

गोवर्द्धन धारण

श्रीकृष्णका बाल्यकालमें ही अद्भुत पराक्रम देखकर माता यशोदाको महान् आश्चय होता था। राजा कंसने पूर्व भवमें तपके प्रभावसे सात देवियोंको सिद्ध किया था उन देवियोंको कंसने बुलाया और अपने शत्रुको मारनेके लिये उन्हें आज्ञा दी। देवियाँ शत्रुको मारनेके लिये अनेक रूप धारण करती थीं, अनेक उपाय रचती थीं, लेकिन वे सब व्यर्थ थे ६ देवियाँ अपना काम कर कृष्णसे परास्त हो चुकी थी। सातवी देवीने कृष्णको मारनेके लिये भयंकर पत्थरोंकी वर्षा प्रारम्भ की। पत्थरोंकी मारसे गोप गोपिया और गौवें तथा अन्य गोकुल वासी जन व्याकुल हो उठे। सब त्राहि त्राहि करने लगे, इसी समय उनसे और तो कुछ नहीं बना,वे सीधे. कृष्णके पास आये और प्रार्थना की प्रभो! इस उपद्रवसे तो हमारी जान जा रही है, आप हमारी रक्षा करें, तब प्रतापी श्रीकृष्णने अपनी बायीं भुजाकी एक अँगुलीसे गोवर्धन पर्वत उठा लिया। सब गोप, गोपी, आनन्दमें निमग्न हो गये, और सब कृष्णकी प्रशंसा करने लगे।

राजा वसु और झूंठका फल

राजा वसु स्फटिकके सिंहासनपर बैठे हुये हैं। आप इतने सत्य प्रतिज्ञ थे कि आपका स्फटिक मयी सिंहासन अधर रहता था, और इसी सिंहासनपर बैठ न्याय और नीतिका विचार किया करते थे। राजा वसुकी सभा जुरी हुई है। सभामें नारद और पर्वत इन दो नामोंके व्यक्ति भी बैठे हुये हैं। दोनोंमेंसे एक पर्वतने कहा कि—

"स्वर्ग चाहने वाले पुरुष "अज" द्वारा यज्ञ करें। अज शब्दका अर्थ 'चतुष्पद पशु है' और यह अर्थ सर्वलोकमें प्रसिद्ध ही है। वेदका भी वाक्य है कि "अजैर्यष्टव्य" अर्थात् अज बकरेसे यज्ञ करना चाहिये। जिसमे याजिक और पशु दोनोंही स्वर्ग जाते हैं। पवत इस प्रकार अपने पक्षका समर्थनकर बैठ गया। बाद नारदने इसके पक्षका खंडन किया कि—अज शब्दके बहुत अर्थ हैं। अज शब्दका चतुष्पद पशु करना व्यर्थ है। जिस प्रकार "हरि" शब्दके अनेक अर्थ हैं। कौशिक शब्दका अर्थ इन्द्र और घुघू, और हरि शब्दका अर्थ इन्द्र, नारायण, सिंह, बन्दर आदि होता है परन्तु जहा पर जैसा अर्थ अभीष्ट और समुचित, योग्य होता है, वहाँपर वैसा ही अर्थ लगाया जाता है, परन्तु इसकी बुद्धिमें अज, नाम बकरेका ही प्रतिभासित हुआ है, पर यह अर्थ नहीं किन्तु यहापर अज शब्दका अर्थ 'त्रिवर्पायशालि' तिवरसे यव (जौ) हैं। त्रिवर्षीय यव पृथ्वीमें पैदा नहीं हो सक्ते क्योंकि ये अचित्त हैं, उनसे होम करना चाहिये। जिन भगवानकी पूजा यज्ञ है और पूजाके अनन्त ब्राह्मण, क्षत्री वैश्य अग्नि होम करते, हैं अत होमके लिये अचित्त सामिग्री चाहिये। ऐसा यज्ञ स्वर्गका कारण है। किन्तु —

जीव हिंसासे स्वर्ग नहीं होता। जीव हिंसा करने वाले याज्ञिकही स्वर्ग जायें तो नर्क कौन जायगा? नरकका कारण हिंसा है और स्वर्ग तथा सुखकी प्राप्तिका कारण सत्य धर्म है। कुपथ्या माता पुत्रको सुख नहीं देसक्ती। इस प्रकार असत्यपक्षका खण्डन करनेवाले नारदकी सभी सभा जन प्रशसा करने लगे। तदनन्तर बहुश्रुत पण्डितोंने राजा बसुसे पूछा कि राजन! आपने गुरु क्षीरकदम्बसे जैसा सुना हो वैसा सत्य कहो, तब वह मूढ़, दुष्ट बुद्धि राजाबसु गुरुका वचन जानता हुआ भी झूठ बोला, उसने कहा कि नारद युक्तिसे बोलता है सत्य नहीं किन्तु जो पर्वतने कहा वह सत्य है और गुरुकी आज्ञानुसार है। ऐसा वचन मुखसे निकलाही था कि राजा बसुका अधर स्फटिकका सिंहासन पृथ्वीमें धँस गया यह देख सभा जन आश्चर्य कर रहे हैं।

श्रीकृष्णका परलोक गमन

मुनि श्रापसे द्वारिकापुरी जल भुनकर खाक होगई। यादवोंका कुल भी नष्ट होगया। बान्धव, हितैषी परिवारसे वियुक्त हो दोनों भाई जीवनकी आशा रख दक्षिणकी ओर चले। मार्गमें हस्तपप्रा नामक नगर मिला, वहा ये दोनों भाई गये, उस नगरका राजा अच्छदन्त था, इनका शत्रु था। कृष्णजी तो उस नगरके वनमें ही रहे और बलदेवने भोजनादिकी व्यवस्थाके निमित्त नगरम प्रवेश किया। नगरमें इनके रुप, बल, पराक्रमको स्मरणकर मनुष्य इनके पास इकट्ठे होने लगे। यह बात राजा अच्छदन्तको भी मालूम हुई। उसने इनके मारनेके लिये सेना भेजी। इससे युद्ध हुआ और युद्धमें श्रीकृष्ण और बालरामने सबको हरा दिया, ठीकही है नारायणके सामने कौन टिक सक्ता है?

नगरमें भोजन सामग्री लेकर विजय नामक नगरमें आये। वहापर श्रीभगवान नेमिनाथको स्मरणकर अन्न पानादिक किया। वहाँसे चलकर कोशाम्बी नामक महावनमें आये। इस समय दो पहर हो चुका था, ग्रीष्मऋतु थी, सूर्यदेव अपनी प्रखर किरणोंसे भूमिको तप्तायमान कर रहे थे।

मृग, मृग तृष्णामे प्राण विसर्जन कर रहे थे। सब जङ्गलके जीव प्यासले व्याकुल हो रहे थे, उसी समय कृष्णको भी प्यासने आ सताया और प्यासके मारे व्याकुल हो उठे, तब कृष्णने बलदेवसे कहा कि मुझे प्यास लगी है। मेरे ओष्ठ सूख रहे हैं, तालु प्रदेश सूखा जाता है, अब आगे एक पैर भी नही बढाया जाता मुझे कहीं शीतल जलमिले तो अच्छा हो, यह सुन बलदेवने कहा तुम शान्ति धारण करो मैं अभी जल लाकर आपको पिलाता हू। और मैं जबतक जल लेकर आता हू तबतक जिन स्मरण रूप जलसे अपनी पियासको शान्त करो। यह कहकर बलदेव पानीको ढूढते हुये बहुत दूर निकल गये, पर अभी तक जलका ठिकाना न मिला। इधर श्रीकृष्ण जलकी पिपासासे व्याकुल हो एक सघन वृक्षकी छायामें बायें परपर दाहिना पैर रखकर खेद दूर करनेके लिये क्षणभर विश्राम करने लगे, इतनेमे उसी समय देव योगसे जरत्कुमार वहाँ आ निकला, वह पापी मृगयाके लिये वनमे अकेला ही घूमता फिरता था, वह इस जगलमें इसीलिये आया था कि किसी प्रकार श्रीकृष्णकी रक्षा हो, क्योंकि एक बार चारण मुनिने कहा था कि श्रीकृष्णकी मृत्यु जरत्कुमार-से होगी। यह सुनकर जरत्कुमारने सोचा कि जब मैं यहाँ द्वारिकापुरीमे ही न रहूगा तो मेरे हाथसे श्रीकृष्णकी मृत्यु कैसे होगी। परन्तु, दैव प्रधान है, मुनिके वाक्य असत्य नही हो सक्ते जरत्कुमार वनचरोंकी तरह, घूमता फिरता यहाँ आया तो देखता क्या है कि एक वृक्षके नीचे मृग लेटा हुआ है, यद्यपि ये श्रीकृष्ण ही थे, भ्रमका कारण इनका पीताम्बर हुआ, उसने समझा कि यह पीला २ वस्त्र समान हल रहा है सो सुप्त मृगका कान है। बस यह धारणा कर उसने धनुप पर बाण लगाकर चलाया तो कृष्णके चरण तलमें लगा, जिससे पगतल भिद गया।—श्रीकृष्ण मूर्च्छित होगये, बाद कुछ सचेत हो कहने लगे, ओ बाण मारनेवाले! मेरे सामने तो आ, मैं देखू तू कौन है? यह आवाज सुन जरत्कुमार अपने शिकारकी तलाश करता हुआ शिकारके पास आया तो देखा कि यह तो श्रीकृष्ण हैं। हा! मैंने अनर्थ कर डाला, हा मैं! पापी हू, इस प्रकार हा हा कार करने लगा। इधर कृष्ण जरत्कुमारको शिक्षा दे परलोक सिधारे।

शीत परीषह

शीत पडे कपि मद गलै, दाहे सब वन राय। ताल तरगनि तट विषै, ठाडे ध्यान लगाय॥

शीत परीषहका अर्थ ठडकी बाधा या कष्टको सहन करना शीत परीषह कहलाता है। शीत प्रधान पूस और माघ मास हैं, इन मासोंमे अत्यन्त शर्दी पडती है। शर्दीकी वजहसे सभी लोग गर्म वस्तुओंका व्यवहार करते हैं, परन्तु वे अखण्ड तप धारी, शीत परीषहको जीतने वाले मुनिराज निश्चल शीतकी कुछ भी परवाह न कर नदियोंके किनारे जाकर तपस्या कर रहे हैं। जिस समय, चारो तरफ ठडी ठडी हवा चलती है। ठडके कारण पानी जम जाता है, तुषारसे चारों दिशायें पूर्ण हो जाती हैं। ठडके कारण पुरुषोंकी दाँती बँध जाती है, उस समयमे ये निर्ग्रन्थ गुरु नदी तटपर अचल हो निश्चल ध्यानमें मग्न हैं।

ग्रीष्म परीषह

ग्रीषम ऋतु रवि तेजसे, सूखे सरवर नीर। शैल शिखर मुनि तप तपें, ठाढे अचल शरीर।

ग्रीष्म शब्दका अर्थ गर्मी है और परीषह शब्दका अर्थ है कष्टोंका सहन करना, अथवा केवल "सहन करना"। अब ग्रीष्म परीषहसे यह मतलब निकला कि गर्मी या ग्रीष्मऋतु की बाधाको सहन करना ग्रीष्म परीषह कहलाती है। ग्रीष्म परीषह सहन करना साधारण काम नहीं है। जिस समय सूर्य नारायण अपनी प्रचंड किरणोंसे समस्त भूमि तलको अग्नि समान बना देते हैं। प्रचण्ड तेज धारी सूर्य देवका ही जिस समय एक छत्र राज्य रहता है। जमीन पर पैर रखते ही पैर जलने लगता है, सारे जीव गर्मीसे बाहर तक नहीं निकलते, धूपकी तरफ देखने-से ही आखोंमें चकाचौंध और ज्वालायें सी उडने लगती हैं। रास्तोंमें आना जाना छोड़ देते हैं सारे दिन पशु, पक्षी, प्याससे व्याकुल हो जंगलके वृक्षोंकी शरण लेते हैं, घास चरनेवाले मृग मृग तृष्णामें प्राण विसर्जन करते हैं, और नदी तथा सरोवरोंके जल सूख जाते हैं, जहाँ पानीका दर्शन तक नहीं मिलता गर्म गर्म लपटोंसे चारों तरफ सन्नाटा सा छा जाता है, उस समय ग्रीष्म परीषह धारी महान् आत्मा, मुनिराज पर्वतकी चोटीपर जाकर ध्यान कर रहे हैं,

राजा श्रेयाँस भगवान ऋषभको आहार दे रहे हैं

राजा श्रेयाँस और उनका भाई सोमप्रभु मणियोंसे सुसज्जित चौकमें भोजनके लिये बैठ ही रहे थे कि इतनेमें सिद्धार्थ नामके द्वारपालने प्रभु ऋषभदेवके आगमनकी सूचना दी, कि महाराज। जगत्पति प्रभु ऋषभदेवने नगरमें प्रवेश किया है। नगर निवासी जन उनकी सेवा सुश्रूषा तथा चरण-कमलोंमें अर्घ चढ़ाते हैं। कोई नमस्कार, वन्दना करता है और मौनावलम्बी प्रभु ऋषभ देव ईर्या शुद्धि करते हुये चले आरहे हैं। ये दोनों भाई सिद्धार्थके वचन सुन अति भक्ति भावसे प्रेरित होकर उठे और भगवान ऋषभदेवके सन्मुख जाकर वन्दना की। मुनिकी तीन प्रदक्षिणा देकर चरणकमलोंमें साष्टाङ्ग नमस्कार किया। बाद अति नम्रतासे कहने लगे, प्रभो! आइये, हमें आज्ञा दीजिये, हम आपके सेवक हैं। मौनावलम्बी प्रभु ऋषभदेव इसका कुछ भी उत्तर न दे अगाडी बढ़े, इतनेमें राजा श्रेयाँसको पूर्वभवका स्मरण हुआ, और मुनि आहारकी विधि स्मरणकर हे भगवन! अत्र तिष्ठ तिष्ठ कहकर आदर पूर्वक गृहमें लिया। उच्चासनपर बैठाकर पाद प्रक्षालन किया, और मन, वचन, कायसे चरणोंकी पूजा की। तदनन्तर आहार विधिके जाननेवाले राजा श्रेयाँसने इक्षु रस लेकर कहा, हे भगवान्! यह रस शुद्ध है और सम्पूर्ण दोषोंसे रहित है। इसे ग्रहण कीजिये। भगवान् शुद्धात्मा व्रतकी वृद्धिके लिये पाणिपात्रमें आहार ले रहे हैं और राजा श्रेयाँस उन्हें आहार दे रहे हैं।

१ ज्ञानावरणी कर्म

जैसे परदा पडा मूर्ति पर ज्ञान नही होने पाता। वैसे ज्ञानावरण कर्मसे ज्ञान जीवका ढक जाता ॥
प्रथम घातिया कर्म यही है चिद्बोधक यह कहलाता। जगको इसने अज्ञ बनाया अज्ञ मनुज नहि लखपाता॥

२ दर्शना वर्णी

ये भूपति हैं सर्व जगतके, दर्शन करते हैं सब लोग। द्वारपाल भी खूब अजब है देता नहीं दर्श सयोग ॥
इसी तरह दर्शनसे सबको करे दर्शनावरण निराश। चक्षु,अवधी,केवल दर्शन अरु अचक्षुका सत्यानाश ॥

३ मोहनीय

मदिरा पीकर मस्त हुये हैं भूले हैं कुल गौरव मान। सुधि बुधि भूल गये सब तनकी रहा न कुछ भी ज्ञान ॥
मोहनीय भी गहरी मदिरा दूषित कर देती है प्रान। सम्यक् दर्शन ज्ञान चरणपर ताने रहती सदा कृपान ॥

४ अन्तराय

दीन विप्र कुछ मॉग रहा है दाता देने लगा इनाम। पर मुनीमने मना किया तब हुआ न कुछ भी काम ॥
ठीक समझो इसी तरह है अन्तराय भी कर्म महान।
अन्तराय यह कर देता है जो होता हो शुभ कल्याण ॥

५ आयु

फसे हुये हैं पैर काष्ठमें इधर उधर नहि हो सकते।
नष्ट हुआ स्वातन्त्र्य मनुजका फिर कुछ भी नहि कर सकते ॥
ससारी भी फँसे हुये हैं आयु जालके बन्धनमे।
देव, मनुज, पशु, नरक योनिमें फिरते हैं सबके तनमे ॥

६ नाम कर्म

चित्रकार कुर्सीपर बैठे बना रहे है चित्र विचित्र। नाम कर्मभी देहोंको है रचता मानो मेरे मित्र ॥
श्वेत कृष्ण अरु हलका भारी रुप,रसादिक गन्ध महान। येही वेष्टन,कर्म सगठन रच देता है कर्म प्रमान॥

७ गोत्र कर्म

कुम्भकार जो चाहे जैसे प्यालोका निर्माण करे। गोत्र कर्म भी उच्च नीचका उनमे जो व्यवहार करे ॥
आतम प्रशसा, परनिन्दासे, गोत्रकर्मका होता बन्ध।
अन्य गुणोंके ढकनेसे भी होता नीच गोत्र सम्बन्ध ॥

८ वेदनीय कर्म

मूर्ख सिपाही लगा चाटने शहद लपेटी वह तलवार।
मिला स्वादपर जीभ कटगई बहने लगी खूनकी,धार ॥
थोड़े झूठे सुखके कारण सहता है दुखोंका भार।
वेदनीयसे सुख दुख मिलता मनमें ऐसा करो विचार ॥"सतीश"

९ नारकीय दुःख

मार रहे हैं, पीट रहे हैं एक दूसरे आपसमे। काट रहे हैं छेद रहे हैं, कुचल रहे हैं आपसमें ॥
वृक्षोंके पत्ते असि जैसे देह विदारें छेदे गात। मुण्ड भूमिपर पड़े हुये,हैं, नरक दुःख य दखो भ्रात॥



चारुदत्त सेठ और वसन्त सेना

C y A t Pre Calcu ta.

१ ज्ञानावरणी कर्म

जैसे परदा पडा मूर्त्ति पर ज्ञान नहीं होने पाता। वैसे ज्ञानावरण कर्मसे ज्ञान जीवका ढक जाता ॥
प्रथम घातिया कर्म यही है चिद्रोधक यह कहलाता। जगको इसने अज्ञ बनाया अज्ञ मनुज नहिं लखपाता॥

२ दर्शना वर्णी

ये भूपति हैं सर्व जगतके, दर्शन करते हैं सब लोग। द्वारपाल भी खूब अजय है देता नहीं दर्श सयोग ॥
इसी तरह दर्शनसे सबको करे दर्शनावरण निराश। चक्षु,अवधी,केवल दर्शन अरु अचक्षुका सत्यानाश ॥

३ मोहनीय

मदिरा पीकर मस्त हुये हैं भूले हैं कुल गौरव मान। सुधि बुधि भूल गये सब तनकी रहा न कुछ भी ज्ञान ॥
मोहनीय भी गहरी मदिरा दूषित कर देती है प्रान। सम्यक् दर्शन ज्ञान चरणपर ताने रहती सदा कृपान ॥

४ अन्तराय

दीन विप्र कुछ माँग रहा है दाता देने लगा इनाम। पर मुनीमने मना किया तब हुआ न कुछ भी काम ॥
ठीक समझलो इसी तरह है अन्तराय भी कर्म महान।
अन्तराय यह कर देता है जो होता हो शुभ कल्याण ॥

५ आयु

फसे हुये हैं पैर काष्ठमें इधर उधर नहि हो सकते।
नष्ट हुआ स्वातन्त्र्य मनुजका फिर कुछ भी नहि कर सक्ते ॥
ससारी भी फँसे हुये हैं आयु जालके बन्धनमें।
देव, मनुज, पशु, नरक योनिमें फिरते हैं सबके तनमे ॥

६ नाम कर्म

चित्रकार कुर्सीपर बैठे बना रहे हैं चित्र विचित्र। नाम कर्मभी देहोको है रचता मानो मेरे मित्र ॥
श्वेत कृष्ण अरु हलका भारी रुप,रसादिक गन्ध महान। येही वेष्टन,कर्म सगठन रच देता है कर्म प्रमान॥

७ गोत्र कर्म

कुम्भकार जो चाहे जैसे पात्रोंका निर्माण करे। गोत्र कर्म भी उच्च नीचका उनमे जो व्यवहार करे ॥
आत्म प्रशसा, परनिन्दासे, गोत्रकर्मका होता बन्ध।
अन्य गुणोंके ढकनेसे भी होता नीच गोत्र सम्बन्ध ॥

८ वेदनीय कर्म

मूर्ख सिपाही लगा चाटने शहद लपेटी वह तलवार।
मिला स्वादपर जीभ कटगई बहने लगी खूनकी,धार ॥
थोडे झूठे सुखके कारण सहता है दुखोंका भार।
वेदनीयसे सुख दुख मिलता मनमें ऐसा करो विचार ॥"सतीश

९ नारकीय दुःख

मार रहे हैं, पीट रहे हैं एक दूसरे आपसमें। काट रहे हैं छेद रहे हैं, कुचल रहे हैं आपसमें ॥
वृक्षोंके पत्ते असि जैसे देह विदारें छेदे गात। मुण्ड भूमिपर पडे हुये,है, नरक दुःख य दशा भ्रात ॥



चारुदत्त सेठ सन्यासीके जालमें



श्रीकृष्णाकी माताके सात स्वप्न

Gaya Art Press Calcutta.



वसुदेव श्रीकृष्णको लेकर नन्दके घर ले जा रहे हैं।



नन्दके घरमें श्रीकृष्णका आविर्भाव ।



नन्दके घरमें श्रीकृष्णका आविर्भाव ।



वसुदेव देवकीको नन्दकी कन्या दे रहे हैं।

प्रकाशक—जिनवाणी प्रचारक कार्यालय, कलकत्ता।



कंस देवकीकी सन्तानको पैर पकडकर पत्थर पर पछार रहे हैं।



नन्दकी स्त्री यशोदाकी गोदमें श्रीकृष्ण

प्रकाशक—ज्ञानवाणी प्रचारक कार्यालय, कलकत्ता।



नन्दके घर श्रीकृष्णका लालन पालन प्रारम्भ हो रहा है।

प्रकाशक—जिनवाणी प्रचारक कार्यालय, कलकत्ता।



श्रीकृष्णने सहस्रदल कमल तोड़ा

O ya \ i Press Calcutta



श्रीकृष्णका मल्ल युद्ध

Gay Art Press, Calcutta.



श्रीकृष्ण मथुरा जा रहे हैं

प्रकाशक—जिनवाणी प्रचारक कार्यालय, कलकत्ता।



द्रोपदीपर नारदका कोप



श्रीकृष्णका पराक्रम





पाण्डवोंकी द्यूत क्रीड़ा और वनवास

O y Art Pre s Ca cu ta



द्रोपदी स्वयम्बर



वसुदेव श्रीकृष्णको लिये यमुना पार कर रहे हैं।



पूतना वध

प्रकाशक—जिनवाणी प्रचारक कार्यालय, कलकत्ता।

जैन चित्रावली

जैन चित्रावली



आहार दान



श्रीनेमनाथ जीव घिरे देख पूछ रहे हैं

Gay Art Press.



श्रीकृष्णने अपनी उङ्गलीमें गोवर्धन पर्वतको उठा लिया।

प्रकाशक—जिनवाणी प्रचारक कार्यालय, कलकत्ता।



वसुराजाकी सभा और असत्यका फल

जैन चित्रावली



श्रीकृष्णकी मृत्यु



शीत परीषह



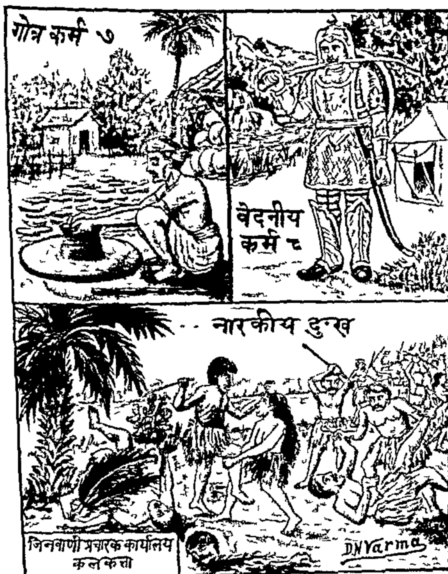
ग्रीष्म परीषह


मोहनीय कर्म ३
दर्शनावरणी कर्म २
जिनवाणी प्रचारक कार्यालय
कलकत्ता


अन्तराय कर्म ४


आयु कर्म ५
जिनवाणी प्रचारक कार्यालय
कलकत्ता


नाम कर्म ६
D.N. Varma



Gaya Art Press Calcutta